

DPN 5911

Title: पीठे भूत बलि PĪTHE BHŪTA BALI

Run. No. 6602

Cat. No.

Micro. No.

Subject विधि Ritual

Religion: Hindu / Buddha

Language: Skt. / New. / Nep. / Skt. - New. / Maith. - New. / New. - Nep. / नेपालभाषा निर्देश दि

Newa direction

Size in cms. 18.5 X 7.2

Folios 12

Lines (in a page) 5

Compl. / Incompl.

Chapt. / act / ~~sub folia~~ missing अनुमा दो म् /

Author / translator

Scribe / donor

फणीन्द्र बल वज्राचार्य
Phaniन्द्र Bal Vajracarya

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place

Script: New. / Dev. / Bhuja. / Ran. /

Illus. :

Material: palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition: fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

ॐ नमः श्री ब्रह्म सायम् ॥ नल बलि मन्त्रा ॥

5

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

0 cms

5

10

15

20

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमः श्री गुरुभ्यो नमः ॥ नतवलि तावना ॥ ॐ नतार्यका
मंजुलं नरवलि नैजात नमिमंजुलं नगुभुक्त ग्राकात्रजान
नयमजाऊनै मंजुत्रिया वलिकाववमिनी नगुरुकदिय
त्रियूलिनं ॥ ॐ ग्रा ग्रां वेंदें ॥ लोमो योतां ॥ ॐ कात्रजदविमिन
यं वामन यक्ष यदी यरुधनदृष्टा ॥ ॐ ग्रा ॥ ॐ ॥ लाकवालाम्

डाडसयत् ॥ ॥ ॥ ॐ ॥ न्द्राय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ ॐ वल
नाय स्वाहा ॥ ॐ कवनाय स्वाहा ॥ ॐ नमिय स्वाहा ॥ ॐ नैज नै
हा ॥ ॐ वायुव स्वाहा ॥ ॐ न्नीम नाय स्वाहा ॥ ॐ उद्यवुक्ताय स्वाहा
॥ ॐ सुखासाहाविय नैय स्वाहा ॥ ॐ चयानकुत्राविय नैय स्वाहा ॥
ॐ नागय स्वाहा ॥ ॐ न्द्रुनय स्वाहा ॥ ॐ सर्वदिक्कालाकवात्र

स्याहा॥ वलिसस्या नवाय॥ २ ॥ यथायदा नदू जा॥ लाग्ग
वादनं तुति मसुतयेन॥ ॥ उँ न नागालिकालियलि जत
वदुसूर्यस्य गान कनद्वयानुहंका नदुद्धा॥ उँ न नानानुगता
सर्वधर्माः॥ उँ यनस्य नानुगताः सर्वधर्माः॥ उँ न नानुगता
सर्वधर्माः॥ उँ दद्यमानं समय प्रमाजं त इकावाचत्यन

प्रमाजं प्रमनं न रुवेयु मता दद्यामसा ननुग्रह हं उरु
गा॥ हं एव शुक्राजि काना॥ उँ वडाललि हाः उहं वं हा वज
जकि यसमयस्य दन हा॥ ३ ॥ थनमात्रसा ययथा ना
दग्गवलिस ददं स्या हायके॥ वलिसा ला॥ ४ ॥ उँ क न १
क न १ वं १ ग म य १ का ग य १ दं १ क १ हं १ रु १ द १

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय ।
नमो भगवते वासुदेवाय ।

डम नागवडा वडा मिनि ल वडा र गव वडा मोष्ठि वडा
 को व वडा कुजुली वडा युह मानवडा वमसिगृ यथिवीद
 वगा सयत्रितानान ॐ दं पुरी वूयदीयु च न वद दि सैय
 क वल यहा रैव छनिका युगुज मसदि न गय सुवर्ण व
 य धान्या नूयावनी नाहा सत्सुखा यहा नका सर्वइह

बुद्धिमानाश्च मनूष्यानां च कुरुयत्कुरुयत् सा ह यः ॐ नमः
नाकनाम्नः समसर्वसत्त्वान् च दिनं च सुवर्णं धनं चान्या
यु यावनाग्राय सत्सु इवानि महासुखं च वेद्यं यथा
वदा वा विमज्जुलं यथैकं टाकयत् सत्सु इवासाकिनः
आकुरुते ॐ श ॥ सव इक्षो मूढा पुरुजक नानि न आक

इत्याह ॥ ॐ ॥ अदिवजिसहस्रं धर्मो निर्मचगृहीतुव
निविमृष्टाश्चिज्जमनि यनिरुयतिश्च ग्रायायतिवायुव
नावियश्च ॐ नानरु नावि यतिश्च दवा ॐ कचला क्रीयि
महश्च दवा समसत्तहा युविज्जचनागा ॥ ५ ॥ नावा नागुज्जग
र्जसंमृताः ॥

[illegible]

三



π

0 cms

5

10

15

20



फराणी नूरान वज्राचार्य



पीठ भूत बालि

परमेश्वर

४ गमावस्त्रित्यागीनी॥ धानद्रुपमहाद्रुवा, उद्धुद्रुवाक
५ नी कपालमालमालिन्या, उद्धुद्रुगायमहद्विकाः, उद्धुद्रुका
६ पनद्रुका, उद्धुद्रुका, उद्धुद्रुका, उद्धुद्रुका, उद्धुद्रुका, उद्धुद्रुका
समाधिका॥ यं वं विं नीमहातव, सर्वकामानुसासनं, याग
मधुलमकंदानागी, उद्धुद्रुनीयुगुक्ता, तं थागतमहाकाय, निग

सकृद्वानासहस्रसंघे गृह्णन्तुं दाया मुकुन्तुं दाया
मेव वृद्धनिवासनिहृता ॥ येन न ये वसुना यश्च यथा दयास्त
त्र विमदिनश्च ॥ न गत्र वसुश्च वसुश्च वसुश्च सन्ति सन्ति सन्ति
गमेव ॥ न त्वानयथा विकता विवागा ॥ वापित दत्ता यत्नलव
हृदा वसुश्च ये वसुमहाद विष्णु ॥ गमेव वसुश्च वसुश्च च निजुलव ॥

दवा विवासासुन काननम् । शून्यालयदवगृह्यते वृ ।
विहानवध्यावशथागुमम् । यथैवसा लासुचकं अजलान्
यहहगाचिग्रहवन्निजथासुविधावुचयत्नम् । यथै
कवृत्तम् सदावथैव । महाम्मम्मानम् सदावन्म् ॥ सिंहानि
वृत्तम् तिसृयन् । वमतिथ्यानाम् सदावन्म् । दिवम्

वाचकतालयम् । महाम्मम्मानम् सदावन्म् ॥ हृदा ७
गमालम् । यथैव तिसृयन् । विलयन् । नृक्षम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् ।
दीर्घम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् ॥ ॐ उड्डम् । यम् । उड्डम् ।
उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् ।
यागान् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् । उड्डम् ।

42

हवत्रयावलिमात्रा ॥ ॐ शिवत्रयमहाकालाय
 नमः ॐ श्री ह्रीं रुद्रमयमास युध्यवदीय नक तानवाता
 रुद्रनाग यज्ञ गोशम गृह्ण १०० दंभलिरा हा ह्रीं रवाहिर
 ह्रीं रुद्रमहाष्ट हास गज १०० वृषभय ह्रीं रुद्र
 हाहा ॥ महाकालाय ॥ ॐ हानीतीमहयकुम्भी प्रियकनी
 महायकुम्भनायतिः यश्चमत्तयत् यतिवानाप्ता नानाशान्ता

10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525
 526
 527
 528
 529
 530
 531
 532

वनवना सर्वलका विरुषिगा उतिक्का यमुज उँ श्रुष्ट
 ववूयदीयगन्धने वेडु कुरुषुजयवका विरुषिगा यु
 तिक्का कुट्टनादि पूय सर्वकामार्थ सानि यनि दूर्ण मूर्द्ध २४
 स्व स्वादि २ गोवय २ हा नीति म हाय कृषि सर्वकामार्थ साधनि
 दहिः दायगय उँ श्रुष्ट कुरु स्वाहा ॥ हा नीती यावलि सागा ॥
 ॥ उँ हा नीती म हाय क्रीषि य प्रवृत्त गन्धनि वात्रा ज दूर्ध
 गिपाल निरुत २ सर्ववावा मत् सर्वयक्तिनी युवगनि ॥

यै गुरु शक्तिं हं रुद्र स्यात् ॥ गीजाल लुत यमकु ४ ॥ ॥ ॐ ५ ॥
गणः कुग्रया ना ०० दद्या नारायण च ०० देवलि गन्धयुध वृषदीर्घ वाङ्
गं कदाम्यही गागा गी सवनित्वानाः शुभीष्टु ०० देवलि गुरु १ रत्नवद्वा द्रु
पिबलु जहं वैदा ४ सरका समः सर्वसत्त्वानाञ्च ॥ अनियदिनका
यत्र भुक्तिं क्व वं लु स्यति हं हं रुद्र वज्र धन आरूप नयय
ति हं हं रुद्र १ स्यात् ॥ नूतन विविधिम ॥ ७ ॥